भजन

तर्ज– ये कैसा सुर मन्दिर है

ये रूहों का अपना सुख है, है आराम यहीं
ये वाणी इनका मयखाना, इश्के जाम यही

1–ये है मेरे पिया की अपनी अंखड वाणी
अपने घर की इस वाणी में लीला सारी बखानी
इश्क रबद की सारी बातें,इसमे ही कही

2–आशिक खुद कहलाए,कभी माशूक कहलाते है
अपनो को अपनापन देकर आप ये समझाते है
भेद छुपाते ना कुछ अपना,है इश्क की रीत यही

3–एक तन मन रंग,एक ही अंग है,एक का ही पसारा
एक में ही सब कुछ है,ना कुछ भी है न्यारा
वाहेदत कहते है इसको ही,एक दिली भी यही